आर.एन.आई-संख्या : DELHIN/2007/23260
पोस्टल रजि. संख्या : DL (N) 06/213/14-16
प्रकाशन की तिथि–2 जुलाई 2014

सृष्टि संवत्- 1,96,08,53,115
युगाब्द-5115, अंक-85-73, वर्ष-8,
आषाढ़ कृष्ण पक्ष, जुलाई -2014
शुल्क- 5/ रुपये प्रति, द्विवार्षिक शुल्क-100/ रुपये
डाक प्रेषण तिथि : 5-6 जुलाई, कुल पृष्ठ-8

प्रेषक : सम्पादक, कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्ष गुरुकुल, टटेसर जौन्ती, दिल्ली-81

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com सम्पर्क सूत्रः 9350945482 Web: www.aryanirmatrisabha.com

संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य' सह-संपादक : आचार्य सतीश

प्र मन्महे शवसानाय शूषमाङ्गूषं गिर्वणसे अङ्गिरस्वत्। सुवृक्तिभिः स्तुवत ऋग्मियायार्चामार्कं नरे विश्रुताय॥-ऋ० १।११।६२।१

व्याख्यान–हे विद्वान लोगों! जैसे हम (सुवृक्तिभिः) दोषों को दूर करने हारी क्रियाओं से (शवसानाय) ज्ञान बलयुक्त (गिर्वणसे) वाणियों से स्तुति के योग्य (ऋग्मियाय) ऋचाओं से प्रसिद्ध (नरे) न्याय करने (विश्रुताय) अनेक गुणों के सह वर्तमान होने के कारण श्रवण करने योग्य (स्तुवते) सत्य की प्रशंसा वाले सभाध्यक्ष के लिये (अङ्गिरस्वत्) प्राणों के बल के समान (शूषम्) बल और (अर्कम्) पूजा करने योग्य (आङ्गूषम्) विज्ञान और स्तुत समूह को (अर्चाम) पूजा करें और (प्रमन्महे) मानें और उससे प्रार्थना करें वैसे तुम भी किया करो।

सम्पादकीय

रोग जब असाध्य हो जाय.....?

जब से मुझे अपना बाल्यकाल स्मरण है, तभी से यह भी स्मृति पथ पर आता है कि-मेरे पिताजी के अध्यापकीय निवास पर जो पुस्तकों की लकड़ी की व्यक्तिगत आलमारी थी, उस पर एक चित्र चिपका हुआ था, जिसके ऊपर लिखा था, "सबका मालिक एक"। वेदाध्ययन काल में जब मैं गौकर्ण, कर्नाटक में विद्यार्थी था, तब एक बार वेदपारायण हेतु हुबली नामक शहर गया था, मुझे स्मरण है कि-उस वेदपारायण का निमित्त 'शिरड़ी साईं' मन्दिर की स्थापना एवं प्रतिष्ठा महोत्सव था। लेकिन उस सम्पूर्ण अनुष्ठान में अपने दक्षिणा व्यवसाय को करने वाले एक भी पुरोहित ब्राह्मण की उस कार्यक्रम के अधिष्ठाता देवता उस शिरड़ी साईं के प्रति कोई श्रद्धा न थी जबकि वे अनुष्ठान हेतु नियुक्त सभी पुरोहित विशुद्ध पौराणिक मूर्तिपूजक थे। बाल्यकाल में भी जहां और चित्रों को हम भगवान या महापुरुष के रूप में श्रद्धावनत होते थे, वहीं उस साईं चित्र को हम एक मुस्लिम फकीर का ही चित्र समझते थे। अतः घृणा भी न थी तो श्रद्धा भी न थी।

कर्नाटकस्थ, गौकर्ण से जब अध्ययन पूर्ण हुआ, निरुक्तशास्त्र के अध्ययनक्रम में दैवतकाण्ड का जब अध्ययन समय आया, तब आचार्यकृपा से समस्त रूपवान अर्थात् हाथ, पैर, आंख, कान, नाक रहित सत्य देव पदार्थ का जब बोध हुआ, तब शनैः शनैः मूर्तिमान देवता असत्य सिद्ध हुए और ऋषि दयानन्द प्रदत्त सत्य दृष्टि से मीमांसा प्रारम्भ हो गयी, आज प्रभुकृपा से सहस्रों युवा हृदयों से हम मिथ्या कल्पनाओं पर आधारित, अन्धविश्वास मूलक इन तथाकथित देवों का वास्तविक विसर्जन और सत्य देवों को प्रतिष्ठा निरन्तर कर पा रहे हैं। लेकिन अत्यन्त दुःख है कि-काश सारा आर्य जगत, सभी आर्य विद्वान मिलकर योजनाबद्ध रीति से इस महातिमिर का नाश करते तो कितना सार्थक कार्य होता। पुनरपि हम लोग बहुत सफल न भी हों, अपने पुरुषार्थ और सत्यनिष्ठा से सन्तुष्ट अवश्य हैं।

वर्तमान में द्वारिका पीठाधीश्वर शंकराचार्य श्री स्वरूपानन्द ने जो मीडिया के माध्यम से अपनी बात रक्खी है, इसे इतना ही कहा जा सकता है कि-अपने इस जीवनकाल में उन्होंने किंचित् तो सत्य कहने का प्रयास किया, आखिर वे उसी द्वारिका पीठ के शंकराचार्य हैं, जो गुजरात में है और गुजरात ऋषिवर दयानन्द की जन्मभूमि है। आर्य! आर्याओं! अद्वैत शंकरमत की स्थापना लगभग आज से दो सहस्र से तीन सहस्र वर्ष के मध्य केरल प्रान्त में जन्मे विलक्षण मेधा सम्पन्न आदि शंकराचार्य ने की थी, तब देश नास्तिकवादी जैनमत और बौद्धमत के द्वारा बरगलाया जा रहा था, और जन-जन में यह प्रचार किया जा रहा था कि-ईश्वर का कोई अस्तित्व ही नहीं है। और जब ईश्वर ही नहीं है, तब वेद भी मान्य नहीं है। इन दोनों नास्तिकमतों को शंकराचार्य ने अपनी विद्या, बुद्धि, तर्कपूर्ण पुरुषार्थ से पराजित करते हुए अर्जित ज्ञान के आधार **"एकमेवब्रह्म द्वितीय नास्ति"** घोषणा की और अपने श्लोकात्मक उपदेशों में **"वेदो नित्यमधीयताम्, तदुदितं कर्मस्वनुष्ठीयताम्"** अर्थात् वेद नित्य अध्ययन करें, और वेदोक्त कर्मों का अनुष्ठान-आचरण करें, ऐसी शिक्षा दी। उन्होंने अद्वैत वेदान्त का प्रतिपादन किया और उपनिषद् ग्रन्थों की तदनुसार ही व्याख्या की [इस सारे पुरुषार्थ पर ऋषि दयानन्द विमर्श "सत्यार्थ प्रकाश" में अवश्य पढ़े]। उनके इस लेखनादि, प्रचार प्रणाली में कहीं से भी ऐसी नहीं बोध होता है कि-आदि शंकराचार्य मूर्तिपूजक थे, लेकिन वर्तमान का दुर्भाग्य कि-उनके नाम से चलने वाला कोई भी मठ, मन्दिर, आश्रम, विद्यालय या संस्था नहीं जहां यह रोग महारोग न बन गया हो। मूर्तिपूजा के

शेष अगले पृष्ठ पर

सम्पादकीय का शेष.....

अनेक झण्डाबरदारों में ये शंकरमत के लोग अग्रणी हैं। फिर प्रश्न उठता है कि-आखिर शंकराचार्य श्री स्वरूपानन्द जी को यह लघुविवेक अब कैसे उत्पन्न हुआ? जबकि शिरड़ी साईं का प्रचार होते-होते अनेक वर्ष बीत गये। इसका कारण तो यही लगता है कि-अनेक मतावलम्बियों पर (जिनमें शंकरमत भी है), उनके ऐतिहासिक अवतारों पर, चमत्कारिक भगवानों पर, तथाकथित तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं पर जब एक महादरिद्र, भिखारी, संशयास्पद फकीर कहलाने वाला भारी पड़ने लगा, तब स्वर्णयुक्त सिहासनों पर विराजमान जगदगुरु कहलाने वाले महापुरुषों की नींद टूटी, पुनरपि **"अकणान्मन्दकरणश्रेयः"** अर्थात् न करने से कुछ तो अच्छा किया, इस न्याय से हम प्रसन्न ही हैं। लेकिन काश देश के सभी शंकराचार्य मिल बैठकर आदि शंकराचार्य के शास्त्रोचित सिद्धान्तों के अनुसार यह घोषणा कर पाते कि-मूर्तिपूजा एक रोग है, जो असाध्य स्थिति में पहुँच चुका है, अतः हम सभी मिलकर इस महामारी से समाज को बचाने हेतु प्रस्तुत हैं। तो हम निश्चित रूप से कहते कि-हमारा सन्यासाश्रम धन्य हो गया। पुनरपि हिन्दुओं की आंख इतनी तो खुलनी ही चाहिए, जितनी श्री स्वरूपानन्द जी खोलना चाहते हैं। न्यून से न्यून इन साईं को, पीरों को, सैय्यदों को और मजारों को, दरगाहों को तो पूजना बन्द कर ही दें, क्योंकि इनसे हमारा कोई भला नहीं हुआ। और ये काल्पनिक भी नहीं हैं कि इनसे कोई हानि न हुई हो अपितु हमारी श्रेष्ठ परम्पराओं के नाशक, धर्म के ध्वंसक, समाज के पथभ्रष्टक ही हुए हैं। और यह भी जानने योग्य है कि-ऐसे लोगों की पूजा सबसे पहले इस देश में कौन करते हैं? कौन इनकी प्रसिद्धि का कारण बनते हैं, तो निश्चित जानों ये मुम्बई के अधिकांशतः आचरणहीन नचईये (हीरो, हिरोईन) और क्रिकेटर तथा राजनेता। और इन्हीं का अनुकरण करती है सामान्य जनता और प्रारम्भ होता है एक नया अन्धविश्वास।

आर्यों! आर्याओं! शीघ्रता करो, बचो और करोड़ों देशवासियों को बचाओ! बचाओ! बचाओ!

पुरोहित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के द्वारा पुरोहित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। इसके अंतर्गत पिछले मास में 31 मई व 01 जून, 07 व 08 जून, 14 व 15 जून को आर्यसमाज शिवाजी कॉलोनी, रोहतक में तथा 28 व 29 जून को जुरेहड़ा, भरतपुर, राजस्थान में दो-दो दिवसीय 4 कक्षायें हो चुकी हैं। इस पाठ्यक्रम का संचालन आचार्य वर्चस्पति जी के द्वारा किया जा रहा है। भविष्य में भी यह कक्षायें चलती रहेंगी। जो आर्यगण पुरोहित का प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते हैं वे आचार्य वर्चस्पति जी (दूरभाष-9467843826) से सम्पर्क करें।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट पर उपलब्ध

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट www.aryanirmatrisabha.com व www.aryanirmatrisabha.org से भी पत्रिका को प्राप्त किया जा सकता है। पाठकगण पत्रिका को उपरोक्त साईट से डाऊनलोड कर पढ़ सकते हैं व सत्रों की सूचना भी प्राप्त की जा सकती है।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की मासिक गतिविधियाँ

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा निरन्तर वेद द्वारा प्रतिपादित और ऋषि दयानन्द द्वारा व्याख्यायित सिद्धांतों के माध्यम से निर्माण कार्य में संलग्न है। विगत् माह भी महिला व पुरुषों के लिए निम्न आर्य / आर्या निर्माण सत्र लगाए गए।

आर्य प्रशिक्षण सत्र

	स्थान	दिनांक
1.	सैनी धर्मशाला, सफीदों रोड़, जीन्द, हरियाणा	07-08 जून
2.	दयानन्द इन्टर कॉलेज, उग्रपुर, जि.सहारनपुर, उत्तर प्रदेश	07-08 जून
3.	प्रताप स्कूल, खरखौदा, सोनीपत, हरियाणा	07-08 जून
4.	मस्कट पब्लिक स्कूल, नहटोर, बिजनौर, उत्तर प्रदेश	07-08 जून
5.	ओम् कॉम्पलेक्स, डाबडा रोड़, हिसार, हरियाणा	07-08 जून
6.	देवयानी इन्टरनेशन स्कूल, बेवल,महेन्द्रगढ़, हरि.	07-08 जून
7.	आर्यसमाज शिवाजी कॉलोनी, रोहतक, हरियाणा	07-08 जून
8.	आर्यसमाज गांव-जैणी, जिला-करनाल, हरियाणा	07-08 जून
9.	महर्षि दयानन्द इन्टरकॉलेज, दूधली, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.	07-08 जून
10.	गाव-दुलहेड़ा, जिला-झज्जर, हरियाणा	14-15 जून
11.	गांव-गोदीवाली, जिला-फतेहाबाद, हरियाणा	14-15 जून
12.	मध्यामिक विद्यालय, बन्धुहली, दरभंगा बिहार	14-15 जून
13.	राजकीय प्राथमिक विद्यालय गांव-बुहावी, कुरुक्षेत्र, हरि.	14-15 जून
14.	दयानन्द बाल विद्यालय, बड़ौत, बागपत, उ.प्र.	14-15 जून
15.	आर्यसमाज विशाखा एन्कलेव, दिल्ली	14-15 जून
16.	आर्यसमाज, भच्छी, थाना-बहेड़ी, दरभंगा, बिहार	18-19 जून
17.	गुरुकुल चितौड़ाझाल, मुजफ्फनगर, उ. प्र.	21-22 जून
18.	आर्य महाविद्यालय, किरठल, बागपत. उ.प्र.	21-22 जून
19.	राजकीय विद्यालय, हथीन, मेवात, हरियाणा	21-22 जून
20.	आर्यसमाज गांव-भगवतीपुर, रोहतक, हरियाणा	21-22 जून
21.	आर्य वरिष्ठ विद्यालय, गांव-निसिंग, करनाल, हरि.	21-22 जून
22.	आर्यसमाज झिंझाना, शामली, उत्तर प्रदेश	21-22 जून
23.	पिरामिड एकेडमी, बवाना, दिल्ली	21-22 जून
24.	स्थान....., जिला-हरिद्वार, उत्तराखण्ड़	21-22 जून
25.	ओ.पी.एस. विद्या मंदिर से.-13, करनाल, हरि.	28-29 जून
26.	आर्य शिक्षा सदन, न्यू विकासनगर, लोनी, गाजियाबाद, यू.पी.	28-29 जून
27.	गांव-छारा, जिला-झज्जर, हरियाणा	28-29 जून
28.	आर्यसमाज करनाल रोड़, कैथल, हरियाणा	28-29 जून
29.	मूर्तिदेवी आर्य समाज, नजफगढ़, दिल्ली	28-29 जून
30.	राजकीय विद्यालय, ऊंटोली, बहरोड़, अलवर, राजस्थान	28-29 जून

आर्या प्रशिक्षण सत्र

1.	आर्यसमाज टीकरी बागपत, उ.प्र.	14-15 जून
2.	स्वामी विवेकानन्द प. स्कूल, नन्दी गार्डन, लोनी गाजियाबाद	14-15 जून
3.	आर्यसमाज किरतपुर, बिजनौर, उत्तर प्रदेश	21-22 जून
4.	प्रताप स्कूल खरखौदा, हरियाणा	21-22 जून
5.	आर्य महाविद्यालय, किरठल, बागपत, उ. प्र.	28-29 जून
6.	ओ.पी.एस. विद्या मंदिर, से.-13, करनाल, हरि.	28-29 जून

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	12 जुलाई	दिन-शनिवार	मास-आषाढ़	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-पूर्वाषाढ़ा
अमावस्या	26 जुलाई	दिन-शनिवार	मास-श्रावण	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-पुनर्वसु
पूर्णिमा	10 अगस्त	दिन-रविवार	मास-श्रावण	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-श्रवण
अमावस्या	25 अगस्त	दिन-सोमवार	मास-भाद्रपद	ऋतु-शरद	नक्षत्र-मघा

चुनाव २०१४- एक विश्लेषण

-आर्य विकास इंजीनियर, छारा, झज्जर, हरियाणा

12 मई 2014 को 16 वीं लोकसभा के लिए चुनाव संपूर्ण हुए। किसी भी प्रजातांत्रिक राष्ट्र में सशक्त व निष्पक्ष चुनाव प्रणाली का बहुत बड़ा महत्व होता है। यही कारण है कि चुनावों को प्रजातंत्र का आधार माना जाता है। जब तक यह लेख प्रकाशित होगा तब तक चुनावों के परिणाम भी हमारे सामने होंगे। जिस प्रकार का माहौल चुनावी चरणों में देखने को मिला है उससे स्पष्ट है कि राष्ट्र एक महत्वपूर्ण राजनीतिक बदलाव की तरफ बढ़ रहा है। इन चुनावों में भारतीय राजनीतिक परिवेश उससे जुड़े समीकरणों को जानने का अवसर मिला, उनमें से ही कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर मैं लेख के माध्यम से प्रकाश डालना चांहुगा।

(१.) आर्यों! 2014 का यह चुनाव अनेक मायनों में महत्वपूर्ण है। इसे भारतीय समाज में हो रहे सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिवर्तन के प्रथम-चरण के रूप में भी देखा जा सकता है। भारतीय राजनीति की यह विशेषता रही है की वह एक अंतराल के बाद में आंतरिक परिवर्तन लाती है और इसी राजनीतिक मंथन से ही नये राजनेता, नई मान्यता व नई राजनीतिक विचारधारा का जन्म होता है। भूतकाल में आपालकाल, जन-नायक जयप्रकाश नारायण का आंदोलन ऐसे कुछ उदाहरण हैं। वर्ष 2012-14 के समय अंतराल ने भी इसी इतिहास को दोहराया है।

(२.) किसी भी राजनीतिक उथल-पुथल की शुरूआत जन आंदोलनों से होती है। वर्ष 2014 के आम चुनावों के लिए भी जमीन बहुत पहले से ही तैयार होने लगी थी। मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली कमजोर सरकार की गलत नीतियों ने, भ्रष्ट्राचार और मंहगाई आदि मुद्दों ने जहाँ साधारण जनता के मन में आक्रोश पैदा किया वहीं अन्ना आदि के आंदोलनों ने उस आक्रोश को न केवल संगठित किया बल्कि एक मंच भी प्रदान किया। अत: यह कहना की इन जन आंदोलनों ने वर्ष 2014 में हुए चुनावी दंगल के लिए पृष्ठभूमि तैयार की तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। इन जन आंदोलनों में उमड़ी भीड़ से यह स्पष्ट था कि इतिहास अपने आपको दोहराने जा रहा है। आम आदमी पार्टी का उदय और अरविन्द केजरीवाल का नायक के रूप में उभरना इसका प्रमाण था।

(३.) आम आदमी पार्टी के उत्थान और इसके हो रहे पतन से यह स्पष्ट है कि बड़े लक्ष्यों के लिए भावनाओं से ऊपर उठकर यथार्थ से परिचित होकर रणनीति तैयार करनी चाहिए। प्रभाव को बढ़ाने के साथ-साथ उसको स्थायित्व देना भी अति आवश्यक है।

(४.) इन चुनावों में जो सबसे बड़ा सराहनीय व सीखने योग्य विषय है वह है नरेन्द्र मोदी जी की नेतृत्व क्षमता व योजना बनाने की कुशलता। अगर आप भाजपा के पूरे चुनाव प्रचार पर नजर डालेंगे तो पायेंगे की भाजपा ने इन चुनावों में योजना व रणनीति दोनों को साथ लेकर काम किया है। नरेन्द्र मोदी जी ने न केवल भाजपा को संगठित किया बल्कि जनता के आक्रोश को सही दिशा भी दी। उन्होंने जिस तरीके से अपने आपको जनता के सामने रखा, उनका व्यक्तित्व पार्टी से बड़ा नजर आने लगा। इससे न केवल भाजपा कार्यकर्त्ता एक सूत्र में बंधे बल्कि साधारण जनता ने भी उनके इस व्यक्तित्व को विकास पुरुष के रूप में स्वीकार किया। इसका परिणाम यह हुआ कि लोगों ने अबकी बार अपने संसदीय क्षेत्र को देखकर नहीं बल्कि मोदी के नाम पर वोट डाला।

(५.) इन चुनावों में पहली बार देखा गया की क्षेत्रीय राजनीति, केन्द्र की राजनीति के सामने गौण नजर आई। इन चुनावों में जहां शहरी मतदाता ने धर्म, जाति, क्षेत्र को पूरी तरह नकार दिया। वहीं युवा वर्ग विकास, आशावादी सोच की और आकर्षित हुआ। परन्तु यह भी सत्य है कि बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान व उत्तर भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में अभी जातीय समीकरण व धर्म चुनावी रणनीति का हिस्सा हैं। यूपी व बिहार में अमित शाह के नेतृत्व में भाजपा ने धर्म, जाति व क्षेत्र को विकास के साथ ऐसे प्रस्तुत किया है कि चुनावी परिणाम चौंकाने वाले रहे।

(६.) इन चुनावों से यह स्पष्ट हो गया कि तकनीकी, सोशल मीडिया व प्रबंधन (Event management) आने वाले समय में भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण रोल अदा करेंगे। नरेन्द्र मोदी की छवि को लोकप्रिय बनाने में तकनीक (Technology), सोशल मीडिया (Social media) का अहम योगदान रहा है। इतना ही नहीं जन आंदोलनों में जुटी भीड़ भी इन्हीं संसाधनों को कारण थी। 3डी तकनीक, फेसबुक, टवीट्र आदि साधन न केवल आज जनता को नेता से जोड़ते हैं बल्कि जनता के स्वभाव को जानने का भी उत्तम साधन हैं। नरेन्द्र मोदी के भाषणों में इसकी झलक देखी जा सकती थी। यह कहना कि आने वाले समय में ये सभी साधन किंग मेकर की तरह काम करेंगे तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। 'चाय पे चर्चा' कार्यक्रम, 3डी चुनावी सभायें, हैंगआऊट स्तरों ने न केवल युवाओं को जोड़ा बल्कि साधारण जनता के मन में भी आशा व उत्साह का संचार किया।

(७.) हे आर्यों! इन चुनावों में जहाँ पहली बार माइक्रो प्लानिंग व बूथ स्तरीय योजना का अदभुत नजारा देखने को मिला तो वहीं यह भी सिद्ध हो गया कि अगर भारतीय राजनीति में सफलता हासिल करनी है तो केवल धर्म, सम्प्रदाय व समुदाय विशेष आपकी विचारधारा का आधार नहीं हो सकते, यही कारण है कि राम मंदिर का मुद्दा भाजपा के घोषणा पत्र में प्रथम पृष्ठों से उठकर अंतिम पृष्ठों पर संविधान के दायरे तक ही सीमित हो गया। आने वाले समय में कुशल नेतृत्व के साथ-साथ संबंध स्थापित करना होगा। पार्टी की रणनीति व योजना क्षेत्र, समय परिस्थिति के आधार पर निर्धारित होनी चाहिए। पार्टीयों को बूथ स्तर तक की प्लानिंग करनी होगी।

(८.) मोदी के व्यक्तित्व व उनकी कार्यशैली को देखकर यह कहा जा सकता है कि अगर व्यक्ति अनुशासित व वैदिक सिद्धान्तों पर चलता है तो उसकी विजय सुनिश्चित है। आर्य संस्कृति का अंश मात्र जब इस प्रकार का नेतृत्व राष्ट्र को दे सकता है तो विचार कीजिए की आर्य विचारधारा से परिपूर्ण नेतृत्व राष्ट्र को कहां पहुँचा सकता है।

हे आर्यों! आने वाले समय में हमें अगर आर्य राजनीति की विजय पताका फहरानी है तो हमें उपर्युक्त बिन्दुओं पर गहन चिंतन करना होगा और अपनी योजनाओं व रणनीतियों को तकनीक की सहायता से यथार्थ के धरातल पर उतारना होगा, तभी हम श्रेष्ठ राष्ट्र व श्रेष्ठ विश्व का निर्माण कर पायेंगे।

सूचना

सभी आर्यगणों से अनुरोध है कि राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा भिन्न-भिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों सम्बन्धी सूचना पत्रिका के ई-मेल पते :- krinvantovishwaryam@gmail.com पर भेंजे साथ ही सम्बन्धित चित्र (फोटो) भी इसी पते पर भेज देंवे जिससे कि उनको समय पर पत्रिका में प्रकाशित किया जा सके

संध्या काल

आषाढ़ मास, वर्षा ऋतु, कलि-5115, वि. 2071
(14 जून 2014 से 12 जुलाई 2014)
प्रात: काल: 5 बजकर 00 मिनट से (5.00 A.M.)
सांय काल: 7 बजकर 30 मिनट से (7.30 P.M.)

श्रावण मास, वर्षा ऋतु, कलि-5115, वि. 2071
(13 जुलाई 2014 से 10 अगस्त 2014)
प्रात: काल: 5 बजकर 00 मिनट से (5.00 A.M.)
सांय काल: 7 बजकर 30 मिनट से (7.30 P.M.)

आर्यसमाज और जातिवाद

-आर्य सोनु'भास्कर', हरसौला, कैथल

प्राचीन काल में हमारा समाज चातुर्वर्ण्य व्यवस्था पर आधारित था जो ईश्वरीय नियमों (वेद) एवं गुणकर्मों पर आधारित थी। यह व्यवस्था निश्चय ही समाज को श्रेष्ठता की ओर ले जाने वाली होती थी। क्योंकि सम्पूर्ण समाज में से ज्ञान-विज्ञान सम्पन्न होकर जो विद्या लेने एवं देने का कार्य करता, ब्राह्मण कहलाता था। बलिष्ठ शरीर सम्पन्न एवं युद्धकला में निपुण क्षत्रिय कहाता था। उत्तमता से व्यापार कार्य करने वाला वैश्य एवं विद्याग्रहण करना जिसके लिए दुष्कर था, जिसकी बुद्धि विद्याग्रहण में अक्षम थी, वह साधारण से कार्य कर लेता था एवं शूद्र कहलाता था। सैद्धान्तिक दृष्टि से यह व्यवस्था पूर्णत वैज्ञानिक एवं दोषरहित है। क्योंकि कोई भी वर्ण किसी व्यक्ति पर थोपा न जाकर, उसके पुरुषार्थ एवं रूचि के अनुसार उसे दिया जाता था। गुणकर्मानुसार सबको वर्ण (कार्य) मिलता था एवं हर कोई तन-मन-लगन से स्वकार्य करके, राष्ट्रनिर्माण में अपना योगदान देता था। महाभारत काल से कुछ समय पूर्व तक यह व्यवस्था चलती रही एवं तभी तक पूरे भूगोल पर आर्यों का चक्रवर्ती शासन रहा। महाभारत में यह व्यवस्था बिखरने लगी जिस कारण हम पहले अपने ही राष्ट्र में अयोग्य शासकों के, उसके बाद म्लेच्छों के एवं फिर फिरंगियों के गुलाम रहे।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो चार वर्णों की व्यवस्था आज भी प्रत्येक समाज में विद्यमान है। (१.) ब्राह्मण-सम्पूर्ण अध्यापक एवं दार्शनिक वर्ग (२) क्षत्रिय-सम्पूर्ण फौज, गार्ड आदि (३.) वैश्य- सम्पूर्ण व्यापारिक समाज (४.) शूद्र-साधारण कार्य करने वाले। किन्तु वर्तमान समाज में वर्ण व्यवस्था की अनदेखी करके उसकी जड़ें जहां कटी हुई सी एवं जातिव्यवस्था की जड़ें बहुत गहरी प्रतीत होती हैं।

कारण-महाभारत काल के बाद सम्पूर्ण नारी समाज एवं समाज के एक बहुत बड़े भाग को, जिसे पोपों द्वारा शूद्र कहा जाता रहा, को विद्या के मूल स्रोत वेद के पढ़ने सुनने तक से वंचित कर दिया गया, वेद पढ़ाना जिनकी नैतिक जिम्मेदारी थी। धीरे-धीरे क्षत्रिय एवं वैश्यों को वेदाध्ययन से दूर कर दिया। और मात्र ब्राह्मण कुल में उत्पन्न चाहे बुद्धि उसकी शूद्र से भी तुच्छ क्यों न हो (छान्दोग्योपनिषद में जाबाल की कथा आती है। वह शूद्र जाति से था एवं उसकी माता व्यभिचारिणी थी, किन्तु उसे गुरु के पास जाकर सत्य कहा, तब गुरु ने विद्यादान दिया एवं वह जाबाल ऋषि (ब्राह्मण) हुआ।) लोगों तक ही वेदाध्ययन सीमित कर दिया गया, जिसका परिणाम क्या हुआ? महर्षि दयानन्द लिखते हैं-जो ब्राह्मण हैं वे ही केवल विद्याभ्यास करें और क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र न करें तो विद्या, धर्म, राज्य और धनादि की वृद्धि कभी नहीं हो सकती। क्योंकि जब क्षत्रिय अविद्वान् होते हैं, जो वे (ब्राह्मण) जैसा अपने मन में आता है, वैसा ही करते-कराते हैं।

वेदाध्ययन से ही शूद्र ब्राह्मण हो सकता है (किसी ने मुझसे पूछा था कि क्या कभी व्यवहार में भी ऐसा हुआ है? तो उत्तर है, हाँ! रामायण में चाण्डाल कुलोत्पन्न मातंग का वर्णन आता है, जो मातंग ऋषि बना। यही नहीं शुक्र असुर जाति (शूद्र) में उत्पन्न हो, शुक्राचार्य (आचार्य अर्थात् ब्राह्मण) हुए एवं कालिदास भी शूद्र (गडरिया) जाति में पैदा होकर महाकवि कालिदास बना) एवं वेद न पढ़ने से ब्राह्मण शूद्र हो सकता है। (वर्तमान में भी शूद्र जाति से यदि कोर्द अध्यापक, सैनिक आदि बन जाता है वो जाति उसकी पहचान ना रहकर उसका कार्य अध्यापन है तो मास्टरजी एवं सैनिक है तो फौजी साहब ही उसकी पहचान बन जाता है) किन्तु शूद्र से ब्राह्मण एवं ब्राह्मण से शूद्र बनने का तो पुल (वेद) था, उस पुल को ही तोड़कर इन पोपों ने शूद्र के शूद्र एवं ब्राह्मण के ब्राह्मण उत्पन्न होने पर ही मोहर लगा दी। जो जाति व्यवस्था का बीज साबित हुई। उसी कारण महाभारत के बाद भारत की दुर्दशा इन पोपों के कारण हुई है।

आर्यसमाज की स्थिति-हालांकि स्थापना से लेकर आज तक आर्य समाज वर्ण व्यवस्था समर्थक एवं जातिवाद का धुर विरोधी सैद्धान्तिक रूप से रहा है। जहां वर्षों से पुरोहित वर्ग वेद को ही ढ़ाल बनाए हुए था। वहीं सबके लिए वेद के पठन-पाठन का मार्ग, वेद एवं शास्त्रों के प्रमाणों से खोलकर ऋषि दयानन्द ने ही ब्राह्मणवाद पर पहला वार किया था। किन्तु फिर भी व्यवहार में बहुत बार आर्य समाज में भी जातिवाद ने अपना सिर उठाया है, जो आर्यसमाज को जन-जन तक न पहुँचाने देने का बड़ा कारण साबित हुआ है।

प्रथम अवसर हिन्दी साहित्य के प्रस्फुटन काल 1914 का है। उस काल के प्रतिनिधि एवं नायक लेखक थे हीरालाल, जो बाद में स्वामी अछूतानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए। आज से 100 साल पूर्व जब हीरालाल आर्य समाज में जन्मना समानता की संभावना देख रहे थे तब वे सामाजिक इतिहास के अच्छे जानकार थे किन्तु तथाकथित उच्च वर्गीय आर्यों ने दलित एवं अति पिछड़ी जाति के बच्चों को स्कूल में अस्पृश्यता भाव से अलग बैठाया, तो हीरालाल ने आर्यसमाज से रिश्ता तोड़ लिया। ये वही हीरालाल (अछूतानन्द) थे जिन्होंने लन्दन के गोलमेज सम्मेलन में 500 टेलिग्राम भेजकर डॉ. अम्बेडकर को दलितों का सच्चा प्रतिनिधि घोषित करवाया था।

ध्यान दें यदि आर्यसमाज उस समय जातिवाद का विरोध करता एवं स्वामी अछूतानन्द को साथ लेकर चल पड़ता, तो अछूतानन्द के कारण डॉ. अम्बेडकर जो जातिवाद से बहुत त्रस्त थे, आर्यसमाज में अवश्य शामिल होते। और बाद में जो लाखों लोग डॉ. अम्बेडकर से प्रेरित हो बौद्ध हुए, बौद्ध न होकर अपनी मूल धारा (वेद) से जुड़कर, राष्ट्रनिर्माण एवं संस्कृति उत्थान में अपना योगदान दे सकते थे। यही नहीं डॉ. अम्बेडकर के रूप में प्रधानमंत्री पद के प्रथम आर्य उम्मीदवार हमें मिल जाते। चूंकि स्वतत्रंता आन्दोलन में 85 प्रतिशत योगदान आर्यों व आर्य विचारधारा से प्रभावित लोगों का था एवं ऊपर से अम्बेडकर जैसा उच्च शिक्षित (डिग्रीधारी), अत: निश्चित ही अम्बेडकर भारत के प्रथम आर्यसम्राट बनते एवं शायद भारतवर्ष की जो आज दुर्दशा है, वो न होती।

वैसे भी यदि उच्च शिक्षा को उस समय हम देखें, तो अम्बेडकर प्रथम प्रधानमंत्री होने चाहिए थे एवं यदि स्वतत्रंता संग्राम को देखें तो सरदार पटेल भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बनते, जोकि उस समय निर्वाचित भी हुए थे।

पं. जवाहर लाल नेहरू तो उपरोक्त दोनों कसौटियों पर खरे नहीं उतरते थे, किन्तु फिर भी जवाहर लाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने, जो भारतीय राजनीति में भी जातिवाद के प्रभाव को दिखाता है।

दूसरा मेरा स्वयं का अनुभव है। जब तक गांवों के आर्यसमाजियों (वास्तव में जो आर्य हैं ही नहीं) के नीचे एवं प्रभाव में, मैं चलता रहा तो मैं आर्य था। किन्तु जब मैंने परिश्रम एवं संघर्ष से उनसे आगे कदम रखा तो मुझे जातिवाद का शिकार होना पड़ा। जो दिखाता है कि आर्यसमाज में भी जातिवाद पूरी तरह से भरा है। अत: आर्यों को सावधान होने की आवश्यकता है।

समाधान-ऐसे में जब पूरा समाज जातिवाद से ग्रस्त है, तो आर्यसमाज से ही अपेक्षा की जा सकती है। क्योंकि आर्यसमाज ही इसे मिटाने का सामर्थ्य एवं संकल्प रखता है। जैसे सिद्धान्त में आर्यसमाज जातिवाद का कट्टर विरोधी है, वैसा व्यवहार में भी हो। किसी भी जाति, धर्म,सम्प्रदाय से आर्य बने व्यक्तियों को पूरा मान-सम्मान हम दें एवं जो अधर्मी, मांसाहारी, व्यभिचारी हैं वो चाहे स्वर्ण ही क्यों न हो, उनकी कटु आलोचना आर्यसमाज करे एवं अविलम्ब उन्हें आर्यसमाज से बहिष्कृत किया जाए। व्यापक स्तर पर आर्यसमाज जातिवाद के विरूद्ध मोर्चा खोले, तो निश्चय ही जातिवाद के बन्धनों को तोड़ा जा सकता है

हम सावधान हो जाएं। यह चेतावनी है कि यदि अब भी जातिवाद को लेकर हम गम्भीर न हुए तो समाज और देश के टूटने से कोई नहीं बचा पाएगा। और न जानें कितने अछूतानन्द, कितने अम्बेडकर आर्यसमाज खो चुका होगा।

ऋषि निर्देश.....

प्रत्येक गृहस्थ सभासद् समाजोन्नति में तत्पर रहे

"प्रत्येक गृहस्थ सभासद् को उचित है कि वह अपने गृह कृत्य से अवकाश पाकर जैसा घर के कामों में पुरुषार्थ करता है, उससे अधिक पुरुषार्थ इस समाज की उन्नति के लिये करे और विरक्त हो नित्य ही समाजोन्नति में तत्पर रहे।" (मुम्बई में निर्धारित नियमों में नियम ९)

"इसलिये जो उन्नति करना चाहो, तो "आर्यसमाज" के साथ मिलकर उसके उद्देशानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा..... इसलिये जैसा "आर्यसमाज" आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता। **यदि इस समाज को यथावत सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है, क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है, एक का नहीं।**

(सत्यार्थप्रकाश, स०११)

समाज के सभासद् परस्पर कैसे बर्ताव करे?

"इस समाज में प्रधान आदि सब सभासदों को परस्पर प्रीति-पूर्वक, अभिमान, हठ, दुराग्रह और क्रोध आदि दुर्गुणों को छोड़कर उपकार और सुहृद्भाव से निर्वैर होकर स्वात्मवत् सब के साथ वर्त्तना होगा"

(मुम्बई नियम-२२)

पहिले पुरुषार्थ करो और पुनः ईश्वर से सहायता मांगो!

(१.) 'परन्तु मनुष्य को यह करना उचित है कि ईश्वर ने मनुष्यों में जितना सामर्थ्य रखा है, उतना पुरुषार्थ अवश्य करें। उसके उपरान्त ईश्वर के सहाय की इच्छा करना चाहिये। क्योंकि मनुष्यों में सामर्थ्य रखने का ईश्वर का यही प्रयोजन है कि मनुष्यों को अपने पुरुषार्थ से ही सत्य का आचरण अवश्य करना चाहिये। जैसे कोई मनुष्य आंख वाले पुरुष को ही किसी चीज को दिखला सकता है, अन्धे को नहीं, इसी रीति से जो मनुष्य सत्यभाव, पुरुषार्थ से धर्म को किया चाहता है उस पर ईश्वर भी कृपा करता है, अन्य पर नहीं। क्योंकि ईश्वर ने धर्म करने के लिये बुद्धि आदि बढ़ने के साधन जीव के साथ रखे हैं। जब जीव उनसे पूर्ण पुरुषार्थ करता है, तब परमेश्वर भी अपने सब सामर्थ्य से उस पर कृपा करता है, अन्य पर नहीं।"

(२.) "जब तक तुम लोग जीते रहो, तब तक सदा सत्य कर्म में ही पुरुषार्थ करते रहो, किन्तु इसमें आलस्य कभी मत करो, ईश्वर का यह उपदेश सब मनुष्यों के लिये है।"

(ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वेद विषय विचार)

पुरुषार्थ बड़ा या प्रारब्ध

"पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा इसलिए है कि जिससे सञ्चित प्रारब्ध बनते, जिसके सुधरने से सब सुधरते, और जिसके बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं, इसी से प्रारब्ध की अपेक्षा "पुरुषार्थ" बड़ा है।"

(स्वमन्तव्यामन्तव्य)

पुरुषार्थ कितने प्रकार का होता है?

"सब मनुष्यों को उचित है कि पूर्वोक्त धर्म से अप्राप्त पदार्थों की प्राप्ति की इच्छा से सदा पुरुषार्थ करना, प्राप्त पदार्थों की रक्षा यथावत् करना चाहिये, रक्षा किये पदार्थों की सदा बढ़ती करना और सत्य विद्या के प्रचार आदि कामों में बढ़े हुए धन आदि पदार्थों का खर्च यथावत् करना चाहिये। इस चार प्रकार के पुरुषार्थ से धनधान्यादि को बढ़ा के सुख को सदा बढ़ाते जाओ"

(ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वेदोक्त धर्म विषय)

"पुरुषार्थ के भेद-जो अप्राप्त वस्तु की इच्छा करना, प्राप्त का अच्छे प्रकार रक्षण करना, रक्षित को बढ़ाना और बढ़े हुए पदार्थों का सत्यविद्या की उन्नति में तथा सब के हित करने में खर्च करना है इन चार प्रकार के कामों को "पुरुषार्थ" कहते हैं।" (आर्योद्देश्यरत्नमाला)

धर्म कभी मत छोड़ो

"मनुष्यों को योग्य है कि काम से, अर्थात् झूठ से कामना सिद्ध होने के कारण से वा निन्दा स्तुति आदि के भय से भी धर्म का त्याग कभी न करें और न लोभ से, चाहे झूठ (और) अधर्म से चक्रवर्ती राज्य भी मिलता हो, तथापि धर्म को छोड़कर चक्रवर्ती राज्य को भी ग्रहण न करें। चाहे भोजन-छादन, जलपान आदि की जीविका भी अधर्म से हो सके वा प्राण जाते हों, परन्तु जीविका के लिये भी धर्म को कभी न छोड़े, क्योंकि जीव और धर्म नित्य हैं तथा सुख-दुःख दोनों अनित्य हैं। अनित्य के लिये नित्य को छोड़ना अतीव दुष्ट कर्म हैं इस धर्म का हेतु कि जिस शरीर आदि से धर्म होता है वह भी अनित्य है। धन्य वे मनुष्य हैं जो अनित्य शरीर और सुख दुःखादि के व्यवहार से वर्त्तमान होकर नित्य धर्म का त्याग कभी नहीं करते।" (संस्कारविधि-गृहस्थ प्रकरण)

"सब जगत् की प्रतिष्ठा धर्म ही है। धर्मात्मा का ही लोक में विश्वास होता है, धर्म से ही मनुष्य लोग पापों को छुड़ा देते हैं, जितने उत्तम काम हैं वे सब धर्म में ही लिये जाते हैं। इसलिए सबसे उत्तम धर्म को ही जानना चाहिये"। (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वेदोक्त धर्म विषय)

परमेश्वर का सर्वोत्तम, प्रधान और निज नाम

(१) "ओ३म्", यह ओंकार शब्द परमेश्वर का "सर्वोत्तम नाम है।"

(२) "सब वेदादि शास्त्रों में परमेश्वर का "प्रधान" और "निज" नाम (ओ३म्) को कहा है, अन्य सब गौणिक नाम हैं।"

(सत्यार्थ प्रकाश, स० १)

(३) "ओ३म्", यह "मुख्य" परमेश्वर का नाम है, जिस नाम के साथ अन्य सब नाम लग जाते हैं।" (संस्कार विधिः, वेदारम्भ संस्कार)

(४) "ओ३म्", यह तो "केवल" परमात्मा ही का नाम है और अग्नि आदि नामों से परमेश्वर के ग्रहण में प्रकरण और विशेषण नियमकारक हैं।" (सत्यार्थ प्रकाश, सं. १)

(५) "जो ईश्वर का "ओंकार" नाम है, सो पिता पुत्र के सम्बन्ध के समान है और यह नाम ईश्वर को छोड़ के दूसरे अर्थ का वाची नहीं हो सकता। ईश्वर के जितने नाम हैं, उनमें से "ओंकार" सब से "उत्तम" नाम है, इसलिये इसी नाम का जप, अर्थात् स्मरण और उसी का अर्थविचार सदा करना चाहिये, कि जिससे उपासक उसके हृदय में परमात्मा का प्रकाश और परमेश्वर की प्रेम भक्ति सदा बढ़ती जाय।"

(ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, उपासना विषय)

उत्तम क्वालिटी के ओ३म् ध्वज, वैदिक साहित्य व आर्यावर्त्त हवन सामग्री की प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें-

आर्य मार्किट, शिवाजी कॉलोनी, रोहतक

-सम्पर्क सूत्र- 9466904890

अहिंसा-कायरता नहीं निडरता

-आचार्य सतीश

योग दर्शनकार ने यम और नियमों की जो व्यवस्था व्यक्ति व समाज के जीवन को व्यवस्थित करने के लिए दी है उनमें पहला यम है-अहिंसा, अहिंसा नामक यम वास्तव में अन्य सभी यम और नियमों के लिए आधार का कार्य करता है। क्योंकि अहिंसा का पालन न करने से अन्य यम व नियमों का पालन संभव ही नहीं है। आइए, अहिंसा नामक यम को समझने व जानने का प्रयास करते हैं। क्योंकि पराधीनता व अज्ञानता के लम्बे काल में अहिंसा का सही-सही अर्थ ही समाप्त हो गया और जिस प्रकार से हमारे अन्य सिद्धान्त व परम्पराएं विकृति को प्राप्त हो गई, ऐसा ही यम-नियमों के साथ भी हुआ जिसमें अहिंसा भी शामिल है।

अहिंसा का अर्थ करते हुए महर्षि व्यास योगदर्शन के भाष्य में लिखते हैं-सब प्रकार से सब कालों में समस्त भूतों (प्राणियों) को पीड़ा न देना अहिंसा है। कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति या अन्य प्राणी को पीड़ा या तो अपनी वाणी से पहुँचाता है, या फिर अपने शरीर से ऐसी चेष्टा करता है जिससे दूसरे को पीड़ा पहुँचे। लेकिन अनेक विद्वानों व शास्त्रों ने मन में भी हिंसा न करने का विधान निश्चित किया है, लेकिन यदि हम मोटे तौर पर देखें तो मन में किसी के प्रति वैर रखने मात्र से तो उस व्यक्ति या प्राणी को कोई हानि नहीं पहुँचती। फिर मनसा, वाचा, कर्मणा के रूप में हिंसा का निषेध क्यों किया गया। लेकिन थोड़ा सा और विचार करने पर यह देखा जाता है कि वाणी या शरीर की किसी चेष्टा का मूल कारण तो मन का विचार ही है। मन में विचार के उत्पन्न हुई बिना न तो वाणी और न ही शरीर किसी कार्य में युक्त होता है। हाँ, ऐसा तो हो सकता है कि मन का विचार वाणी व शरीर की क्रिया के रूप में परिवर्तित न हो और वह मन तक ही सीमित रह जाए। लेकिन वाणी व शरीर की चेष्टा मन में विचार के बिना नहीं हो सकती। अर्थात् यह तो आवश्यक नहीं कि प्रत्येक मानसिक विचार क्रिया के रूप में प्रकट हो लेकिन प्रत्येक क्रिया का आधार मानसिक विचार अवश्य ही होता है। तो फिर ऐसे मानसिक विचार जो क्रिया रूप में प्रकट नहीं होते और जिनमें दूसरे के प्रति वैर रहता है उनको हिंसा की श्रेणी में क्यों मानें। इसका सीधा सा उत्तर है कि वैर-भावना के विचार हमारे संस्कारों का निर्माण करते हैं जो कालान्तर में हिंसा का रूप धारण करने की क्षमता रखते हैं।

अत: मानसिक स्तर पर किसी प्रकार के वैर का न होना ही अहिंसा है और सबसे महत्वपूर्ण है मन में वैर-भावना को समाप्त करना, तभी वाणी और शरीर की हिंसा भी समाप्त होगी। इसी कारण से महर्षि मनु द्वारा रचित स्मृति ग्रन्थ में अहिंसा के लिए बार-बार निर्वैर होने का निर्देश दिया है, अर्थात् मन में भी किसी को पीड़ा पहुँचाने का भाव ही उत्पन्न न होने देना।

आइए अब हिंसा के कारणों पर विचार करें। महर्षि व्यास हिंसा के तीन मुख्य कारण मानते हैं-लोभ, क्रोध, मोह। इन्हीं भावों के उत्पन्न होने पर मनुष्य के मन में द्वेष की उत्पत्ति होती है। जब लोभ का भाव उत्पन्न होता है अर्थात् जब व्यक्ति अपनी योग्यता से अधिक की प्राप्ति चाहता है, तभी दूसरे के प्रति द्वेष की उत्पत्ति होती है। क्रोध की उत्पत्ति तो होती ही द्वेष के कारण है। इच्छा की पूर्ति न होने पर धैर्य न रख पाने से क्रोध की उत्पत्ति होती है और फिर इच्छा की पूर्ति में बाधक तत्व के प्रति द्वेष उत्पन्न होता है जो हिंसा का मूल कारण है अर्थात् मानसिक हिंसा। मोह अर्थात् दूसरे की प्रसन्नता या अप्रसन्नता से स्वयं प्रभावित होना, जिसकी कि हमारे लिए आवश्यकता न हो, वही राग व द्वेष का कारण बनता है और द्वेष ही हिंसा है। अत: लोभ, क्रोध व मोह हिंसा के मूल कारण हैं। मूल कारणों को जानकर इनको दूर करके ही अहिंसा का पालन किया जा सकता है।

अगर सभी व्यक्ति इसी प्रकार इस यम का पालन करें तो संसार भर से हर प्रकार की हिंसा, द्वेष, लोभ, क्रोध, मोह, ईर्ष्या, लूट-खसोट आदि सभी अवगुण समाप्त हो जाएं। कोई किसी का शोषण करेगा ही नहीं। असमानता समाप्त हो जाए, सभी सुखपूर्वक रहें, समस्याएं समाप्त! लेकिन क्या ऐसा संभव है? मनुष्यों की भिन्न-भिन्न प्रवृति, स्वभाव, रूचि व कर्मफल की भिन्नता (कार्य करने में स्वतंत्र होने के कारण) के कारण सभी एक प्रकार का व्यवहार, विचार व कार्य कर ही नहीं सकते। भिन्नताएं रहेंगी और उन्हीं भिन्नताओं के कारण सभी अहिंसा का पालन कर सकें यह संभव नहीं है। हाँ, जितने अधिक संख्या में अहिंसा का पालन करने वाले होंगे, उतना ही समाज में समरसता रहेगी, जितना कम पालन करने वाले होंगे समाज में उतना ही विद्वेष फैलेगा।

इन परिस्थितियों में समाज में ऐसे व्यक्ति भी होंगे, जो अहिंसक होंगे, दूसरे के प्रति विद्वेष रखने वाले होंगे, दूसरे को हानि पहुंचाने वाली प्रवृति के होंगे। और फिर सामान्य सिद्धान्त है कि मानसिक प्रवृतियों को यदि न रोका जाए तो वे बढ़ती चली जाएँगी क्योंकि हमारा सीधा सम्बन्ध जड़ प्रकृति से है, उसी के सहयोग से हम सभी कार्य कर पाते हैं जो तामसिक गुण को लिए होती है। इसीलिए हमें गुणों व सात्विकता को धारण करने तथा अवगुणों व तामसिकता को दूर करने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है तभी वे उस रूप में हो पाते हैं।

अब यदि देखा जाए तो हिंसक गुण या प्रवृति को रोकने के लिए वाणी तथा शरीर का उपयोग उसके लिए करना पड़ता है, जिससे अन्य व्यक्तियों या प्राण्यिों को कष्ट पहुँचता है। और यह हम ज्ञान चुके है कि अहिंसा रूपी गुण को धारण और हिंसा रूपी अवगुण को रोकने के लिए पुरुषार्थ करना ही पड़ता है। तो क्या हिंसा को रोकने के लिए किसी प्राणी को कष्ट देना हिंसा कहलाता है। लेकिन न तो अहिंसा का धारण और न ही हिंसा से रक्षण बिना प्रयास के होता है, अत: हिंसा को रोकने के लिए प्रयास तो करना ही पड़ता है अन्यथा अहिंसा का पालन व धारण हो ही नहीं सकता है।

क्योंकि गोहत्या रूपी हिंसा को रोके बिना गोपालन निरर्थक है, निर्दोषों की हत्या रोके बिना राष्ट्र व समाज में शान्ति संभव नहीं, दुष्टों व अधर्मियों को दण्ड दिए बिना धर्म की स्थापना संभव नहीं। अत: हिंसा को रोकने के लिए वाणी और शरीर से दूसरे को दिया गया कष्ट हिंसा तो हो नहीं सकता क्योंकि वह तो अहिंसा की स्थापना के लिए ही एक प्रयास है अत: वह अहिंसा की श्रेणी में ही आएगा। अर्थात् विद्वानों का कथन अक्षरश: सत्य है कि यदि कारण विद्यमान है तो लाखों मनुष्यों का वध करना भी अहिंसा ही कहलाता है अन्यथा तो अहिंसा मात्र कायरता का रूप धारण कर लेती है और राष्ट्र को इससे बड़ी हानि होती है। और यहां कारण एक ही हो सकता है और वह है हिंसा को रोकने का प्रयास, हिंसक-प्रवृति को रोकने का प्रयास। यदि मांसाहार पर विचार करें तो पायेंगे कि मांसाहारी व्यक्ति भी हिंसक ही होता है क्योंकि वह हिंसा को रोकने के लिए अन्य प्राणियों को कष्ट नहीं देता अपितु परोपकारी पशुओं का भक्षण करता है अर्थात् मांसाहारी केवल हिंसक ही नहीं कृतघ्न भी होता है जो अपने आप में बहुत बड़ी अनैतिकता और पाप है। ऋषि दयानन्द ने भी मांसाहार के निषेध का सबसे बड़ा आधार नैतिकता व आर्थिक कारणों को ही बनाया है।

योगदर्शनकार का एक और निर्देश है कि हिंसा केवल स्वयं से ही नहीं की जाती अपितु दूसरे के द्वारा किसी को कष्ट पहुंचाना तथा हो रही हिंसा का अनुमोदन करना भी उसी श्रेणी में आता है और अहिंसा नामक यम का उल्लंघन है, इसी प्रकार हिंसा को न रोकना, रोकने के लिए अन्यों को प्रेरित न करना व हो रही हिंसा को रोकने के प्रयास का अनुमोदन और सहयोग न करना भी अहिंसा के यम का उल्लंधन है।

अत: अहिंसा के नाम पर कायरता को छोड़कर अहिंसा के सही अर्थ को ग्रहण करना चाहिए अर्थात् मन में किसी प्राणी को कष्ट देने का भाव उत्पन्न नहीं होना चाहिए, वाणी व शरीर से भी किसी को कष्ट न दे और निर्वैर रहते हुए शरीर तथा वाणी से हिंसा व हिंसक प्रवृति को रोकने का पूर्ण पुरुषार्थ होना चाहिए। यही शास्त्रों का आदेश भी है तभी तो राजा व क्षत्रिय वर्ग की अपरिहार्यता है।

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

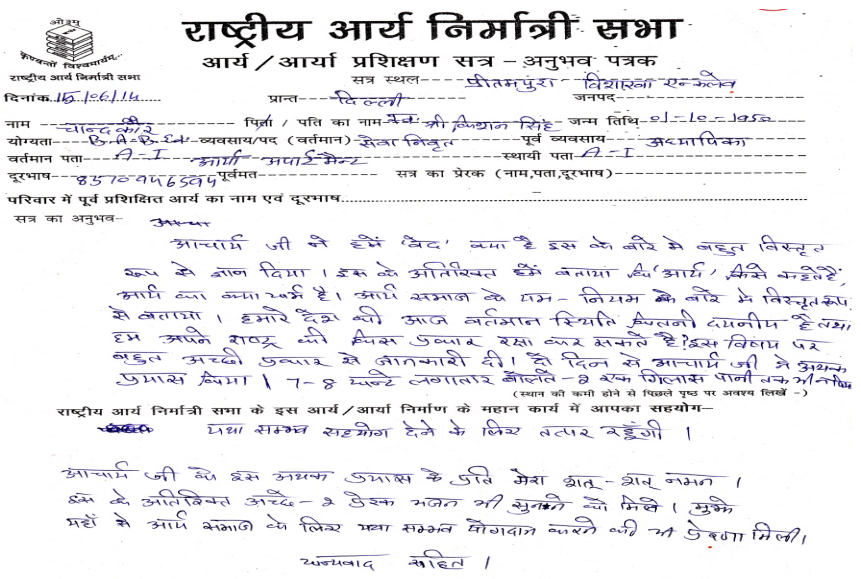

आचार्य जी ने हमें 'वेद' क्या है इस के बारे बहुत विस्तृत रूप से ज्ञान दिया। इस के अतिरिक्त हमें बताया कि 'आर्य' किसे कहते हैं, आर्य का क्या धर्म है। आर्य समाज के यम-नियम के बारे में विस्तृत रूप से बताया। हमारे देश की आज वर्तमान स्थिति कितनी दयनीय है तथा हम अपने राष्ट्र की किस प्रकार रक्षा कर सकते है? इस विषय पर बहुत अच्छी प्रकार से जानकारी दी। दो दिन से आचार्य जी ने अथक प्रयास किया। 7-8 घन्टे लगातार बोलते-बोलते एक गिलास पानी तक भी न पिया। आचार्य जी के इस अथक प्रयास के प्रति मेरा शत-शत नमन। इस के अतिरिक्त अच्छे-अच्छे प्रेरक भजन भी सुनने को मिले। मुझे यहां से आर्य समाज के लिए यथा सम्भव योगदान करने की भी प्रेरणा मिली।

यथासम्भव सहयोग देने के लिए तत्पर रहूँगी।

चान्दकौर, आयु-64 वर्ष, योग्यता- बी.ए.,बी.एड.

कार्य- सेवानिवृत (अध्यापिका) निवास-आर्य अपार्टमेन्ट, से.-15, रोहिणी, दिल्ली

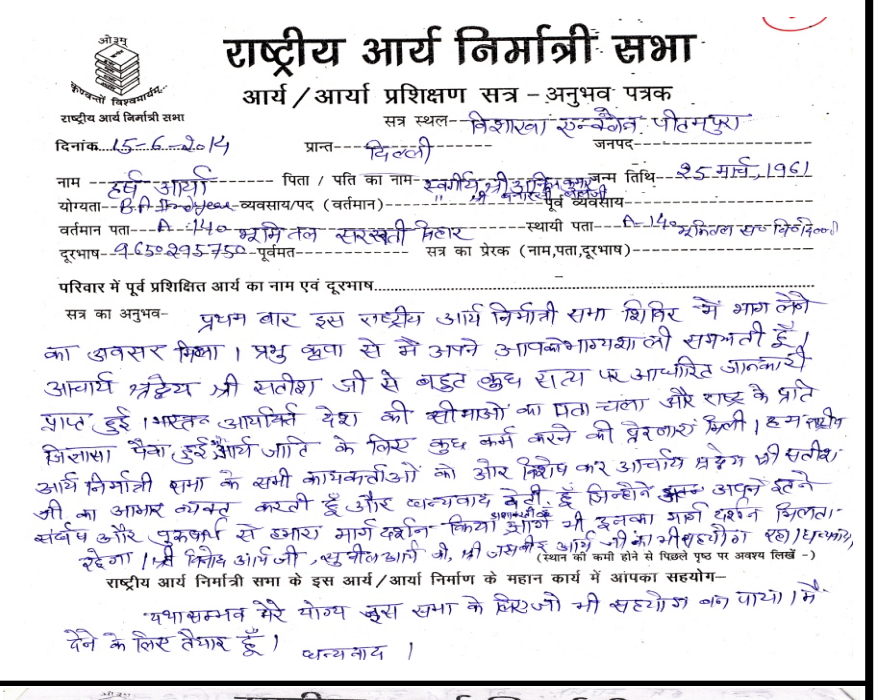

प्रथम बार इस राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा शिविर में भाग लेने का अवसर मिला। प्रभु कृपा से मैं अपने आप को भाग्यशाली समझती हूँ। आचार्य श्रद्धेय सतीश जी से बहुत कुछ सत्य पर आधारित जानकारी प्राप्त हुई। आर्यावर्त देश की सीमाओं का पता चला और राष्ट्र के प्रति जिज्ञासा पैदा हुई, और आर्य जाति के लिए कुछ कर्म करने की प्रेरणाएं मिली। हम राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के सभी कार्यकर्त्ताओं को ओर विशेष कर आचार्य श्रद्धेय श्री सतीश जी का आभार व्यक्त करती हूँ और धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने अपने इतने संघर्ष और पुरुषार्थ से हमारा मार्ग दर्शन किया, आशा करती हूँ कि आगे भी इनका मार्ग दर्शन मिलता रहेगा। श्री विनोद आर्य जी, सुनील आर्य जी, श्री जसवीर जी का भी सहयोग रहा

यथासम्भव मेरे योग्य इस सभा के लिए जो भी सहयोग बन पाया। मैं देने के लिए तैयार हूँ।

हर्ष आर्या, आयु-53 वर्ष, योग्यता-बी.ए.

निवास-ए-140, भूमितल सरस्वती विहार दिल्ली

ईश्वर क्या है, जीवन में सबसे मूल्यवान क्या है, मूर्तिपूजा तथा अंधविश्वास को उखाड़ फेकना, धर्म क्या है, हमारी सभ्यता संस्कृति क्या थी और क्या है। इस मूर्तिपूजा से हानि, भूत, प्रेत, डायन ये सब अंधविश्वास हैं। 33 कोटि देवताओं को हिन्दुओं को किस तरह पढ़ाया गया तथा असल बात क्या है। मेरा देश कीचड़ में जा रहा है और किस तरह से इस कीचड़ से बाहर निकला जाय।

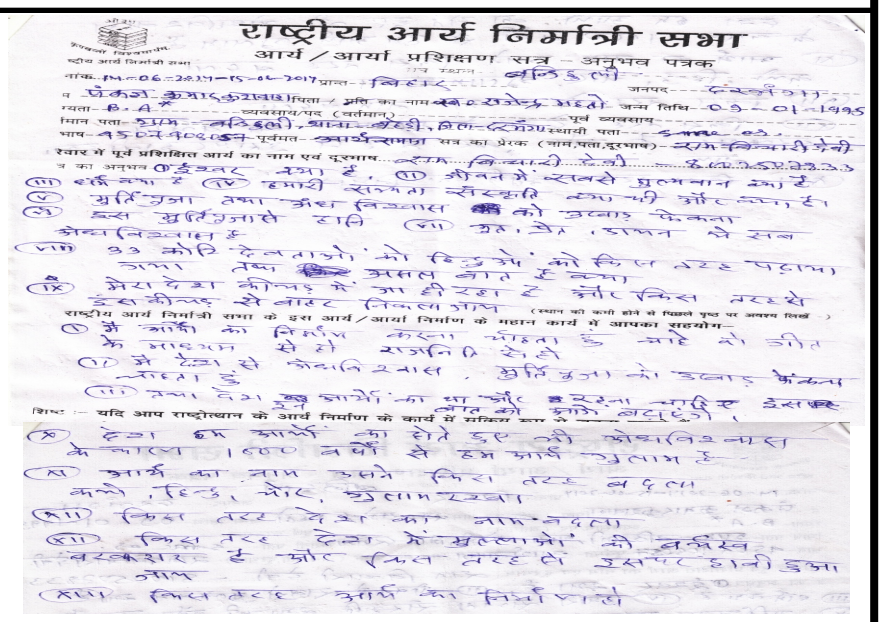

मैं आर्यो का निर्माण करना चाहता हूँ चाहे वो गीत के माध्यम से या राजनीति से । देश हम आर्यो का होते हुए भी अंधविश्वास के कारण 1000 वर्षो से हम आर्य गुलाम हैं, आर्य का नाम उसने किस तरह बदला कभी हिन्दु, चोर, गुलाम रखा। किस तरह देश का नाम बदला, किस तरह देश में मुल्लाओं का वर्चस्व बरकरार है और किस तरह से इस पर हावी हुआ जाय, और किस तरह आर्य का निर्माण हो।

पंकज कुमार कुशवाहा, आयु-19 वर्ष, योग्यता-बी.ए.

निवासी-ग्राम-बन्दिहुली, थाना बहेड़ी, जिला-दरभंगा, बिहार

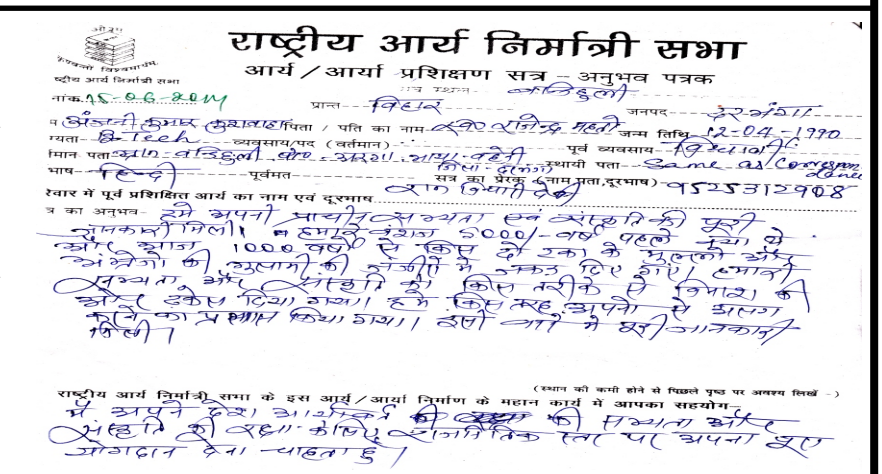

हमें अपनी प्राचीन सभ्यता संस्कृति की पूरी जानकारी मिली। हमारे वंशज 5000 वर्ष पहले क्या थे और आज 1000 वर्षो से किस दो टका के मुल्लों और अंग्रेजों की गुलामी की जंजीरों में जकड़ दिए गए। हमारी सभ्यता और संस्कृति का किस तरह से विनाश की ओर ढ़केल दिया गया। हमें किस तरह अपनों से अलग करने का प्रयास किया गया। इसी बारे में पूरी जानकारी मिली।

मैं अपने देश आर्यावर्त सभ्यता और संस्कृति की रक्षा के लिए राजनीतिक स्तर पर अपना पूरा योगदान देना चाहता हूँ।

अंजनी कुमार कुशवाहा आयु-24 वर्ष, योग्यता-बी.टेक.

पद-अध्यापन, निवासी-गांव-बन्दिहुली, पो.-अरगा, दरभंगा, बिहार

आर.एन.आई-संख्या : DELHIN/2007/23260
पोस्टल रजि. संख्या : DL (N) 06/213/14-16

आर्य निर्माण राष्ट्र निर्माण

हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित पुरोहित प्रशिक्षण सत्र (14-15 जून) आर्यसमाज शिवाजी कॉलोनी रोहतक में आचार्य वर्चस्पति जी व अन्य प्रशिक्षार्थी

पुरोहित प्रशिक्षण सत्र (28-29 जून) आर्यसमाज जुरेहड़ा, भरतपुर, राजस्थान

आर्य प्रशिक्षण सत्र (14-15 जून) आर्यसमाज विशाखा एक्लेव, दिल्ली में आचार्य सतीश व आचार्य देवेन्द्र जी

आर्य प्रशिक्षण सत्र (31मई-01 जून) आर्यसमाज नांगलोई दिल्ली में आचार्य धर्मपाल जी

आर्य प्रशिक्षण सत्र (07-08 जून) बेवल, महेन्द्रगढ़ में आचार्य महेश जी, आर्य राजेन्द्र व आर्य महेन्द्र जी

आर्य प्रशिक्षण सत्र (31मई-01 जून) सिहोर, मध्य प्रदेश में आचार्य राजेश जी

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् पत्रिका की सदस्यता हेतु 100 रुपए द्विवार्षिक शुल्क मनीआर्डर से प्रांतीय कार्यालय के पते पर भेजें, स्थानीय राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के सदस्यों के पास भी शुल्क जमा कर रसीद ले सकते हैं। पूरा पता अवश्य लिखें, न पहुंचने पर दूरभाष से कार्यालय में सूचना दें। जिन सदस्यों की सदस्यता एक वर्ष से अधिक पुरानी है वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करवा लेवें।

स्वामी व प्रकाशक आचार्य परमदेव मीमांसक एवं सम्पादक आचार्य हनुमत् प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित एवं सुदर्शन प्रैस, दिल्ली-87 से मुद्रित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।